सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के संदर्भ में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

डॉ प्रेमपाल सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
महात्मा ज्योतिबाफुले रुहेलखण्ड
विश्वविद्यालय, परिसर बरेली।

नवदीप कुमार मौर्य
शोधार्थी
सहायक प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
हिन्दू कॉलेज
मुरादाबाद।

सारांश

माध्यमिक विद्यार्थियों की आयु–अवस्था बहुत महत्वपूर्ण होती है। अनेक विद्यार्थी, रोजगार, विशेषज्ञ और आकांक्षा को वरबाद कर देते हैं। इस अनुसंधान में एक बुनियादी प्रश्न प्रकट होता है कि विभिन्न विद्यार्थी आकांक्षा का स्तर, आत्म बोध और शैक्षिक उपलब्धि में किस को ज्यादा महत्व देते हैं, किस को कम। परन्तु विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक परिवरिक परिस्थिति भी इस पर अपना क्या प्रभाव डालती हैं यह भी महत्वपूर्ण है। सभ्यता, शिक्षा के इतिहास में एक महत्वपूर्ण उपकरण है। जिसके माध्यम से एक राष्ट्र अपने संवैधानिक लक्ष्यों और लोगों की आकांक्षा को समझाने का प्रयास करता है। विद्यार्थियों की सफलता में बौद्धिक योग्यता, शैक्षिक उपलब्धि और आत्म बोध महत्वपूर्ण कारक है। शिक्षा के इस दौर में विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालकों के आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि की स्थिति को जानने की आवश्यकता हैं क्योंकि इसके माध्यम से शिक्षा में उत्तरोत्तर वृद्धि हेतु सुखद परिणाम नहीं मिल रहें हैं। शोध से प्राप्त निष्कर्ष – माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं आकांक्षा स्तर के मध्य ऋणात्मक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया, माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संकाय आधार पर ऋणात्मक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।

• प्रस्तावना

सामाजिक आर्थिक स्थिति एक व्यक्ति के कार्य अनुभव और संसाधनों तक एक व्यक्ति या परिवार की आर्थिक पहुंच और दूसरों के संबंध में सामाजिक आर्थिक स्थिति की पहचान है। एक परिवार के एसईएस का विश्लेषण करते समय, घरेलू आय, कमाई करने वालों की शिक्षा और व्यवसाय की जांच की जाती है, साथ ही साथ परिवार की संयुक्त आय भी शामिल होती है, जबकि किसी व्यक्ति के एसईएस के लिए केवल उनकी अपनी विशेषताओं का आकलन किया जाता है। हाल ही में, अनुसंधान ने कथित वित्तीय तनाव के रूप में एसईएस की एक कम मान्यता प्राप्त विशेषता का

खुलासा किया है, क्योंकि यह आय और आवश्यक व्यय के बीच संतुलन को परिभाषित करती है। अनुमानित वित्तीय तनाव का परीक्षण यह पता लगाकर किया जा सकता है कि क्या प्रत्येक महीने के अंत में एक व्यक्ति के पास पर्याप्त से अधिक है, संसाधन नहीं हैं। हालांकि, समग्र रूप से समाज में आर्थिक अंतर को दर्शाने के लिए एसईएस का अधिक सामान्य रूप से उपयोग किया जाता है। सामाजिक आर्थिक स्थिति को आमतौर पर तीन स्तरों (उच्च, मध्य और निम्न) में विभाजित किया जाता है ताकि उन तीन स्थानों का वर्णन किया जा सके जिनमें एक परिवार या एक व्यक्ति गिर सकता है। इन श्रेणियों में से किसी एक में परिवार या व्यक्ति को रखते समय, किसी भी या सभी तीन चर (आय, शिक्षा और व्यवसाय) का आकलन किया जा सकता है। उच्च सामाजिक आर्थिक परिवारों में शिक्षा पर विशेष रूप से अधिक महत्वपूर्ण बल दिया जाता है, घर के साथ–साथ स्थानीय समुदाय दोनों में। गरीब क्षेत्रों में, जहाँ भोजन, आश्रय और सुरक्षा प्राथमिकता है, शिक्षा को आमतौर पर कम महत्वपूर्ण माना जाता है। युनाइटेड स्टेट्स में युवायों को कई स्वास्थ्य और सामाजिक समस्याओं का खतरा है, जैसे अवांछित गर्भधारण, नशीली दवाओं का दुरुपयोग और मोटापा। इसके अतिरिक्त, कम आय और शिक्षा को श्वसन वायरस, गठिया, कोरोनरी रोग और सिजोफ्रेनिया सहित कई शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के प्रबल भविष्यवक्ता के रूप में दिखाया गया है। ये समस्याएं उनके कार्यस्थल में पर्यावरण की स्थिति के कारण हो सकती हैं, अक्षमता या मानसिक बीमारियों के मामले में, उस व्यक्ति की सामाजिक दुर्दशा का पूरा कारण हो सकता है। माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर और शैक्षिक उपलब्धियों पर सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों का प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण होता है। इस प्रशंसा और नकारात्मक प्रभाव के कई पहलू हो सकते हैं :सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों में विद्यार्थियों के परिवारों की आर्थिक स्थिति प्रमुख होती है। यदि विद्यार्थियों के परिवारों के पास पर्याप्त वित्तीय संवादनशीलता है, तो वे अधिक शैक्षिक संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं, जैसे कि अच्छे पुस्तक, कंप्यूटर, और कोचिंग कक्षाएं, सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के कारण, कुछ विद्यार्थी उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा की अधिक आकांक्षा रखते हैं और उन्हें उसकी ओर अधिक प्रोत्साहित किया जाता है। वे शिक्षा के विभिन्न पहलुओं में उच्चतम प्रदर्शन करने के लिए प्रयासरत होते हैं, सामाजिक–आर्थिक समस्याओं के कारण, कई छात्र शिक्षा के प्रति उनकी आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर पाते हैं। उन्हें शिक्षा के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं मिलते, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है, सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के कारण, कई छात्र शिक्षा के साथ सामाजिक प्रभावों का भी सामना करते हैं। यदि उनके परिवार का सामाजिक स्थिति कम है, तो वे सामाजिक दबावों का शिकार हो सकते हैं, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, सामाजिक–आर्थिक समस्याओं के बावजूद, कुछ छात्र समृद्धि प्राप्त करने के लिए शिक्षा का सही से उपयोग करते हैं। यह उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है और उन्हें बेहतर आर्थिक स्थिति प्राप्त करने में मदद करता है। सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों का शिक्षा पर प्रभाव अहम है, और सरकारें और समाज को इसे सुधारने के लिए कठिन प्रयास करने चाहिए। शिक्षा को सामाजिक समानता, आर्थिक समृद्धि, और समाज के विकास का माध्यम बनाने के लिए सभी वर्गों के छात्रों के लिए समर्थन प्रदान करना चाहिए।

• अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों का माध्यमिक शिक्षा पर प्रभाव होता है, और विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर और शैक्षिक उपलब्धियों के अध्ययनकी महत्वपूर्ण होता है। आजकल की ग्लोबल अर्थव्यवस्था में शिक्षा का महत्व बढ़ गया है। अध्यात्मिक उपलब्धियों के साथ ही उच्च शिक्षा प्राप्त करने की क्षमता भी रोजगार के अवसरों में मदद कर सकती है। माध्यमिक शिक्षा विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा और उनके करियर के लिए तैयार करती है। शिक्षा समाज में समरसता को बढ़ावा देती है और लोगों के बीच सामाजिक और आर्थिक असमानता को कम कर सकती है। यह विभिन्न वर्गों के लोगों को समान अवसर प्रदान करती है और समृद्धि की दिशा में मदद करती है। माध्यमिक शिक्षा विद्यार्थियों के मानसिक और आदर्श विकास की प्रक्रिया को बढ़ावा देती है। यह उन्हें ज्ञान, सूचना, और नैतिक मूल्यों का समझने में मदद करती है और समाज में सकारात्मक योगदान करने के लिए तैयार करती है। एक देश के माध्यमिक शिक्षा सिस्टम का मजबूत होना उसके आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण होता है। शिक्षित नागरिकों की उपलब्धियाँ और योगदान देश के प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। माध्यमिक शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को विज्ञान, साहित्य, गणित, सामाजिक विज्ञान, और अन्य क्षेत्रों में ज्ञान प्राप्त होता है, जिससे वे समृद्धि और विकास के लिए नए रास्तों का पालन कर सकते हैं। माध्यमिक शिक्षा के माध्यम से शिक्षित विद्यार्थी समाज के सदस्य के रूप में ज्यादा सकारात्मक रूप से योगदान करते हैं। वे सामाजिक सुधार, सामाजिक सेवा, और अन्य क्षेत्रों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, जिससे समाज में सुधार होता है। सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के संदर्भ में, माध्यमिक शिक्षा विद्यार्थियों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और उन्हें आर्थिक और सामाजिक उन्नति की दिशा में मदद कर सकती है। इसलिए, शिक्षा प्रणाली को सुधारने और शिक्षा के प्रति लोगों की आकांक्षाओं को समर्थन देने के लिए सामाजिक और आर्थिक संदर्भ को मद्देनजर रखना चाहिए।

• सम्बन्धित शोध साहित्य अध्ययन

प्रस्तुत शोध में निम्न शोधर्थियों ने शोध किये हैं – सेर्गी मैक्सिमेंको, ल्यूडमिला सेर्डियुक (2017) , सक्सेना, राजेश (2017), गेमेचू अबेरा (2018), फ्रैंक मार्टेला और ऐनी बी पेसी (2018), तिवारी, प्रदीप कुमार एवं चौधरी, नीरु (2021), कौर भूपेन्द्र एवं आलम शहरोज (2021) आदि।

• समस्या कथन

सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के संदर्भ में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

• शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं आकांक्षा स्तर के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।

2. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।

• शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं आकांक्षा स्तर के मध्य ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।
2. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

• आंकड़ा संग्रह के उपकरण

प्रस्तुत लघु शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए माध्यमिक स्तर विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

• न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अनुसन्धानकर्ता ने प्रतिदर्श के लिये 800 विद्यार्थियों का चयन किया है।

• उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी ने शोध अध्ययन हेतु निम्न उपकरणों का प्रयोग किया है।

1. सामाजिक आर्थिक परिस्थिति – **प्रो0 अशोक के0 कालिया एवं मि0 सुधीर शाहु द्वारा निर्मित प्रश्नावली।**
2. आकांक्षा स्तर – **प्रो0 वी0 पी0 शर्मा एवं डॉ0 अनुराधा गुप्ता द्वारा निर्मित प्रश्नावली।**
3. शैक्षिक उपलब्धि – **डा0 प्रेमपाल सिंह एवं नवदीप कुमार मौर्य (स्वनिर्मित परीक्षण) द्वारा निर्मित प्रश्नावली।**

• परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या – 1

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् वित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं आकांक्षा स्तर के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति एवं व्याख्या

वित्तपोषित के विद्यार्थी	संख्या	सहसम्बन्ध	सहसबन्ध स्तर
सामाजिक आर्थिक स्थिति आकांक्षा स्तर	480	0.612	0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत

व्याख्या –

तालिका संख्या 1 में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् वित्तपोषित वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं आकांक्षा स्तर के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.173 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

तालिका संख्या – 2

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं आकांक्षा स्तर के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति एवं व्याख्या

स्ववित्तपोषित के विद्यार्थी	संख्या	सहसम्बन्ध	सहसबन्ध स्तर
सामाजिक आर्थिक स्थिति आकांक्षा स्तर	320	0.632	0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत

व्याख्या –

तालिका संख्या 2 में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् वित्तपोषित के विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं आकांक्षा स्तर के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.483 प्राप्त हुआ है। जो कि दोनों समूहों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध को दर्शाता हैं।

तालिका संख्या – 3

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् वित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति एवं व्याख्या

वित्तपोषित के विद्यार्थी	संख्या	सहसम्बन्ध	सहसबन्ध स्तर
सामाजिक आर्थिक स्थिति शैक्षिक उपलब्धि	480	0.428	0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत

व्याख्या –

तालिका संख्या 3 में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् वित्तपोषित के विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का

मान 0.428 प्राप्त हुआ है। जो कि दोनों समूहों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध को दर्शाता हैं।

तालिका संख्या – 4
माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति एवं व्याख्या

स्ववित्तपोषित के विद्यार्थी	संख्या	सहसम्बन्ध	सहसबन्ध स्तर
सामाजिक आर्थिक स्थिति	320	0.461	0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत
शैक्षिक उपलब्धि			

व्याख्या –

तालिका संख्या 4 में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् स्ववित्तपोषित के विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.461 प्राप्त हुआ है। जो कि दोनों समूहों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध को दर्शाता हैं।

• शोध के निष्कर्ष

1. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं आकांक्षा स्तर के मध्य ऋणात्मक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।
2. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संकाय आधार पर ऋणात्मक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।

• सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- सेर्गी मैक्सिमेंको, ल्यूडमिला सेर्डियुक (2017) : Psychological Potential of Personal Self-Relization, June 2017, SOCIAL WELFARE INTERDISCIPLINARY APPROACH 1(6):92, DOI:10.21277/sw.v1i6.244, License CC BY 4.0
- सक्सैना, राजेश (2017) : माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनके सामाजिक आर्थिक स्तर के सम्बन्ध का आशय एवं अध्ययन शिक्षा–चिन्तन, त्रिमूर्ति संस्थान, कानपुर।
- गेमेचू अबेरा (2018) : कॉलेज ऑफ एजुकेशन एंड बिहेवियरल साइंसेज, हरमाया विश्वविद्यालय, पूर्वी इथियोपिया में छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर पारिवारिक सामाजिक–आर्थिक स्थिति प्रभाव, शोध पत्र, Journal of Teacher Education and Educators Volume 7, Number 3, 2018, 207-222
- फ्रैंक मार्टेला ' और ऐनी बी पेसी (2018) : Significant Work Is About Self-Realization and Broader Purpose: Defining the Key Dimensions of Meaningful Work,

Front Psychol. 2018; 9: 363, Published online 2018 Mar 26. doi: 10.3389/fpsyg.2018.00363, PMCID: PMC5879150, PMID: 29632502

- तिवारी, प्रदीप कुमार एवं चौधरी, नीरु (2021) हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, शोध पत्र, षिक्षा शोध मंथन, वॉ.7. नं0 1(अ), अप्रैल 2021.
- कौर भूपेन्द्र एवं आलम शहरोज (2021) माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन, शोध पत्र, षिक्षा शोध मंथन, वॉ.7, नं0 1(अ), अप्रैल 2021.